नए साल की शुभकामनाएं

प्यारेयो! मै आपको सर्वशक्तिमान हुजूर कृपाल के नाम पर नए साल की शुभकामनाएं देता हूँ। हम हजारों साल से नए साल का जश्न मनाते आ रहे हैं। क्या हमने कभी सोचा कि इस संसार को चलाने वाला दाता कौन है? वह दुखी आत्माओं की पुकार सुनकर सदा ही इस संसार में आता है।

परमात्मा कृपाल हमेशा कहा करते थे कि जिस तरह एक अनुभवी मछुआरा कभी भी अपनी टोकरी से मछली को निकलने नहीं देता उसी तरह सतगुरु हमें हमारे सच्चे घर सच्चखंड ले जाएंगे। हमें पल–पल अपनी जुबान से उनका धन्यवाद करना चाहिए।

सर्वशक्तिमान परमात्मा अलग–अलग समय पर आए और अलग–अलग शरीरों में रहते हुए उन्होंने हमें परमात्मा के घर जाने का रास्ता बताया। वह कभी कबीर, कभी गुरु नानक के रूप में आए। हम भाग्यशाली हैं वे फिर कभी सावन सिंह जी के रूप में और कभी हमारे प्यारे महाराज कृपाल सिंह जी के रूप में आए; हमसे ज्यादा भाग्यशाली कौन हो सकता है कि हम परमात्मा के ऐसे प्यारों के साथ बातचीत कर सके और उनके साथ चल–फिर सके इसलिए हमें उनकी दया का आभारी होना चाहिए।

उन्होंने हमारे ऊपर दया की बारिश करके हमें अपने घर वापिस जाने का रास्ता बताया। आइए! हम यह याद रखें कि हमारे सतगुरु सावन–कृपाल सदा ही हम पर अपनी दया की बारिश कर रहे हैं।

मैं आप सभी से प्यार करता हूँ और आपको एक बार फिर नए साल की शुभकामनाएं देता हूँ कि आप इस साल में ज्यादा से ज्यादा भजन–अभ्यास करें, अपने घर सच्चखंड पहुँचें।

आपका प्यारा
अजायब सिंह

RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 January 2019, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd January 2019

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : सोलहवां
अंक : नौवां
जनवरी : 2019

6 एक शब्द
कृपाल यही संदेशा देता

7 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
सन्त परमात्मा के प्रतिनिधि होते हैं

15 सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
आत्मा की दशा

27 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले
भजन-अभ्यास

34 सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी
धन्य अजायब

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक : **नन्दनी**
सहयोग : **परमजीत सिंह**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस - 1, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

99 50 55 66 71 80 79 08 46 01 - 202- मूल्य - पाँच रुपये

E-mail : dhanajaibs@gmail.com **Website :** www.ajaibbani.org

कृपाल यही संदेशा देता

कृपाल यही संदेशा देता, हवा यही सिखलाती है,
सिमरन करते चले चलो तो, मंजिल खुद मिल जाती है, (2)

1. छल-फरेब के किले एक दिन, दुनिया में ढह जाते हैं, (2)
रेतों की दीवार देर तक, कभी नहीं टिक पाती है, (2)
सिमरन करते चले .....

2. इतने सारे पाप साथ में, इतने सारे पापी हैं, (2)
कृपाल ताकत तेरी जय हो, सबका भार उठाती है, (2)
सिमरन करते चले .....

3. ना कोई वैरी ना ही बेगाना, जो भी है सब अपना है, (2)
एक नूर से सब जग उपजयो, गुरबानी बतलाती है, (2)
सिमरन करते चले .....

4. गुरु कृपाल तुम्हारी उंगली, थाम रखी है जिसने भी, (2)
उसके आगे काल काँपता, और मौत घबराती है, (1)
'अजायब' कृपाल तों मंग लै माफी, (2)
जे जिंदड़ी सुख चाहती है,
सिमरन करते चले .....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सन्त परमात्मा के प्रतिनिधि होते हैं

77 आर. बी आश्रम, राजस्थान 2 अक्टूबर 1980

एक प्रेमी *- मैं आज ध्यान के बारे में किताबों में कुछ पढ़ रहा था। जैसा कि महाराज कृपाल सिंह जी ने ध्यान के बारे में बहुत कुछ लिखा है। मैंने दोनों आँखों के बीच में ध्यान लगाकर और अन्य पहलुओं के बारे में कई अलग-अलग बातें सुनी हैं। आप इस बारे में कुछ समझाएं तो बहुत उपयोगी होगा?*

बाबा जी - इस संसार में आए सभी सन्तों ने एक ही तरीका बताया है। जो प्रेमी सन्तों द्वारा बताए गए तरीके से अभ्यास करते हैं वे कामयाब होते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''कुछ लोग कहते हैं एक सौ और कुछ लोग बीस गुना पांच कहते हैं, दोनों चीजें एक हैं और एक जैसी हैं। आंखों के पीछे या दोनों आंखों के बीच में एक ही बात हैं।''

मैंने इंटरव्यू में आपके माथे पर हाथ रखकर कहा था कि आप यहाँ देखें, यह वह जगह है जहाँ आपने देखना है। आपको कम से कम अपना शक मिटा लेना चाहिए था तो आपके सवाल का जवाब मिल जाता। यह जगह दोनों आंखों के केंद्र से थोड़ी दूर है। आपको दोनों आंखों के बीच ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता नहीं आपको उस जगह से थोड़ा ऊपर देखना है।

सतसंगियों के इस बारे में अलग-अलग विचार नहीं होने चाहिए। सभी सन्तों ने एक ही बात कही है कि आपको अपनी दोनों भौहों के बीच और पीछे ध्यान देना है जो दोनों आंखों के केंद्र से थोड़ा ऊपर है। नामदान के समय सबको एक ही तरीका बताया

जाता है। महाराज सावन सिंह जी और महाराज कृपाल सिंह जी ने इस बारे में जो कहा है मैं भी वही कह रहा हूँ। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''वही प्रकाश है, वही अभ्यास का तरीका है सिर्फ गुरु बदलते हैं।''

आपको सदा अपना ध्यान एक तरफ लगाने की कोशिश करनी चाहिए। आप सिर्फ सिमरन करके ही ऐसा कर सकते हैं। सिमरन करने से हमारे मन और आत्मा केंद्रित हो जाते हैं। जब ऐसा होता है तब शब्द आत्मा को खींचता है। जब आप अपने ध्यान को एकाग्र कर लेते हैं तब आत्मा शब्द पर सवार होकर अपने असली घर सच्चखंड पहुँच जाती है। हम जब तक सिमरन पूरा नहीं करते ध्यान को दोनों आँखों के पीछे नहीं ले आते तब तक हम ऊँची आवाजें सुनते हैं लेकिन ये आवाज हमें ऊपर नहीं खींच पाएंगी।

शब्द न दाईं तरफ से आ रहा है और न बाँईं तरफ से आ रहा है शब्द ऊपर से आ रहा है लेकिन हमें बाहर की आवाजें सुनने की आदत है इसलिए हम कहते हैं कि शब्द दाईं या बाईं तरफ से आ रहा है। हम जन्म-जन्मांतर से बाहर ही घूम रहे हैं इसलिए हमें केवल अपने कान बंद करने की जरूरत है क्योंकि अभी हमें बाहर की आवाजें सुनने की आदत हैं लेकिन जब आप ध्यान केंद्रित करना शुरू कर देंगे तब आप पूर्ण संगीत सुनने लग जाएंगे फिर आपको कान बंद करने की भी जरूरत नहीं होगी क्योंकि शब्द ऊपर से माथे के केंद्र से आ रहा है।

कबीर साहब ने कहा है, ''बाहरी दरवाजे बंद करके अपने अंदर का दरवाजा खोलें।'' सन्त हमें बताते हैं कि हमने अपने बाहरी कानों को कैसे बंद करना है ताकि हम इस जगह पर अपना ध्यान टिका सकें और शब्द को सुन सकें।

सन्त-सतगुरु हमें यह नहीं कहते कि आप सारी जिंदगी अभ्यास में लगे रहें अगर आप सही तरीके से दस दिन अभ्यास करें तो आप कामयाब हो सकते हैं लेकिन हममें यह कमी हैं कि हम गुरु से उतना प्यार नहीं करते जितना हमें करना चाहिए।

हमें गुरु के स्वरूप का ध्यान करना चाहिए लेकिन हम बाहरी फिल्मों और टेलीविजन की तरफ से अपना ध्यान नहीं हटाते। कई बार मैंने यह बताया है कि जब प्रेमी यहाँ से वापिस जाते हैं तो वे इतना बदल जाते हैं कि उनके पड़ोसी भी उनमें बदलाव देखते हैं। कई ऐसे भी प्रेमी हैं जो मुझे इंटरव्यू में बताते हैं कि अपने घरों में जाकर उन पर फिर दुनियावी रंग चढ़ना शुरु हो जाता है।

यहाँ आने वाले सभी प्रेमियों में एक बार तो बदलाव आ जाता है लेकिन जब वे यहाँ से वापिस जाते हैं तो फिर बदल जाते हैं। अगर कोई गैर सतसंगी भी यहाँ रहकर कुछ समय बिताता है तो वापिस जाते समय वह भी कुछ बदलाव महसूस करता है।

यह मेरा जातिय तजुर्बा है कि प्रेमियों के चेहरों पर यह साफ दिखता है कि जब वे पहली बार यहाँ आए थे तो कुछ अलग दिखते थे लेकिन जब यहाँ पर रहकर उन्होंने अभ्यास किया तो उन्होंने भी अपने चेहरे पर कुछ फर्क महसूस किया कि इस अभ्यास से उन्हें क्या तोहफा मिला।

हमें इस पवित्र यात्रा से बहुत कुछ सीखना चाहिए कि परमात्मा ने हमारे ऊपर दया की हमें यहाँ आने का मौका दिया। हमें इस जगह से सीखना है कि हमें अपने आध्यात्मिक जीवन और दैनिक जीवन में भी अनुशासन को बनाए रखना है। यहाँ पर घूमने-फिरने और देखने वाली कोई जगह नहीं जहाँ जाकर आप अपने मन को

खुश कर सकें। आप याद रखें कि आप यहाँ सिर्फ भजन-अभ्यास करने के लिए ही आए हैं।

आप लोग समय पर सोएं, समय पर उठें तभी आप समय पर भजन-अभ्यास में बैठ सकते हैं। कार्यक्रम का पालन करने की पूरी कोशिश करें। यहाँ आप अनुशासन में रहना सीखेंगे। जब आप वापिस अपने घर जाएंगे तो यही अनुशासन आपकी मदद करेगा। आप एक बार इस अनुशासन को अपने जीवन में ढ़ाल लेंगे तो आप देखेंगे कि आपका जीवन ही बदल गया है।

मैं जब विदेश में टूर पर गया तो प्रेमियों ने मुझे कई अच्छी जगहों के बारे में बताया कि यहाँ बहुत अच्छे पार्क और बहुत अच्छी चीजें हैं जो आपको देखनी चाहिए। मैंने उन प्रेमियों से कहा कि मैं सिर्फ आप लोगों से मिलने के लिए आया हूँ मुझे कहीं घूमने में कोई दिलचस्पी नहीं। अगर आप मेरे हुक्म का पालन करते हैं तो आप अपने अंदर जाएं और अंदर जाकर देखें कि परमात्मा ने आपके अंदर कितनी खूबसूरत चीजें रखी हैं फिर आप इन बाहर की चीजों को कुछ भी नहीं समझेंगे। आप जिस काम के लिए यहाँ आए हैं आपको वही काम करना चाहिए।

मैं मई महीने में जब विश्व दौरे पर जा रहा था उस समय मैंने दिल्ली हवाई अड्डे पर कई पश्चिमी लोगों को देखा जो यहाँ घूमने के लिए आए थे। उस समय यहाँ गर्मी की लहर से बहुत से लोग मर रहे थे। मैं उन लोगों को देखकर हँसा और मैंने पप्पू से कहा, ''ये लोग अपना सुंदर देश और सुंदर घर छोड़कर यहाँ गर्मी में घूम रहे हैं। उनके मैले कपड़े देखकर लग रहा था कि पता नहीं ये कितने दिन से नहाए भी हैं या नहीं? और ये कहते हैं कि हम यहाँ घूमने के लिए आए हैं। यहाँ ऐसा कुछ नहीं जो ये देख सकें। भारत

में लोगों को आकर्षित करने के लिए बहुत अच्छी सड़कें और अच्छी चीजें भी नहीं हैं क्योंकि मैंने दुनिया में कई जगह देखी हैं।''

भारत में देखने योग्य महान सन्त और भगवान के भक्त हैं। भारत ऋषियों-मुनियों का देश जाना जाता है, यह महान पवित्र लोगों का देश है। सिर्फ वही लोग यहाँ से फायदा उठा सकते हैं जो सन्त-महात्माओं और पवित्र लोगों से मिलना चाहते हैं। जो लोग यहाँ सड़कों पर घूमते हैं वे यहाँ से क्या प्राप्त कर सकते हैं? फिर भी वे कहते हैं कि हम यहाँ आनन्द लेने के लिए आए हैं, वे किस तरह का आनन्द ले रहे हैं?

जितना ज्यादा हो सके अभ्यास करें, ज्यादा से ज्यादा सिमरन करें। अनुशासन में रहें और ईमानदारी से अपनी रोजी-रोटी कमाएं। अपने मन को पवित्र रखें क्योंकि पवित्र मन ही अभ्यास कर सकता है। हमेशा अपने मन को शांत रखें, शांत मन ही अभ्यास कर सकता है। अगर एक बार आपके मन में बुरे विचार उठते हैं तो आप पूरी जिंदगी उसे ठीक नहीं कर सकेंगे। आप हमेशा सतगुरु की शरण में रहें क्योंकि सतगुरु की शरण ही सबसे मजबूत किला है। अगर आप खुद को सतगुरु की शरण में रखेंगे तो सतगुरु हर तरह से आपकी रक्षा करेगा।

आप सतगुरु को इंसान न समझें। सतगुरु आत्माओं की संभाल के लिए संसार में आता है और आत्माओं की देखभाल करने के लिए उसे परमात्मा ने भेजा होता है।

जिस तरह कुछ व्यापारिक कंपनियां अपना माल बेचने के लिए अपने ऐजेंटो को भेजती हैं। ऐजेंट अपने माल के बारे में और उसमें छूट के बारे में सब कुछ बताकर हमें उस माल को खरीदने

के लिए प्रेरित करते है। उसी तरह **सन्त परमात्मा के प्रतिनिधि होते हैं।** सन्त हमें परमात्मा के बारे में, अपने असली घर सच्चखंड वापिस जाने के फायदे बताते हैं कि हम कहाँ हैं और हम परमात्मा से क्यों बिछड़ गए?

सन्त हमें बताते हैं कि हम अभ्यास करके परमात्मा के पास वापिस पहुँच सकते हैं। परमात्मा आत्माओं को वापिस लाने के लिए सन्तों को संसार में भेजता हैं। सन्तों का संसार में अपना कोई मिशन नहीं होता, मन हमें भक्ति की तरफ नहीं आने देता। जब हम लापरवाही करते हैं मन की बात मानते हैं तो मन हमें दुनिया का आनन्द लेने के लिए प्रेरित करता है। जैसे बच्चा जब स्कूल जाता है तो उसे तख्ती पर क, ख, ग लिखने में बहुत समय लगता है लेकिन जब उसे मिटाने के लिए कहा जाता है तो जो कुछ उसने घंटों में लिखा होता है वह एक सैकिंड में मिटा देता है।

इसी तरह जब हम कुछ महीने कुछ साल भक्ति करके कुछ इकट्ठा कर लेते हैं अगर हम सावधान नहीं होते और मन की बात मान लेते हैं तो ये बच्चे की तख्ती की तरह सब कुछ सैकिंड में ही खत्म कर देता है। सारी बुराई मन में है अगर हम मन की बात मानते हैं तो हम बुराई का पालन कर रहे हैं।

आप जब भजन के लिए बैठते हैं उस समय आप यह समझें कि सतगुरु हमारी मदद कर रहे हैं, हमारे ऊपर दयालु है। हमें इस समय से फायदा उठाना चाहिए लेकिन जब आपके अंदर बुरे विचार उठते हैं और आप दुनियावी चीजों की तरफ झुकते हैं तो आपको समझना चाहिए कि मन आपके ऊपर भारी हो रहा है उस समय आप मन की तरफ ध्यान न दें।

जब हम अपने मन को वासना का आनंद लेने के लिए प्रेरित करते हैं तो हम क्या करते हैं? हम यह नहीं देखते हैं कि यह उदासी का कारण बनने जा रहा है लेकिन हम अपने मन का कहना मानते हैं और वासना का आनंद लेते हैं। इन सभी सुखों में कोई खुशी नहीं फिर हम अफसोस करते हैं और अपने आपसे वायदा करते हैं कि हम फिर ऐसा नहीं करेंगे लेकिन कुछ समय बाद मन फिर हमें ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''इंसान हमेशा यही कहता है कि मैं फिर ऐसा नहीं करूँगा लेकिन जब मन उसके ऊपर भारी हो जाता है तो उसे याद नहीं रहता कि उसने पहले क्या फैसला किया था? वह मन की बात मानता है और वासना में शामिल हो जाता है इसी तरह इंसान अपनी पूरी जिंदगी बिता देता है। वह न तो पवित्र इंसान है और न ही सांसारिक इंसान।''

मैं ऐसा नहीं कहता कि विवाहित जीवन बुरा है। आप विवाहित जीवन में भी पवित्रता बनाए रख सकते हैं। पवित्रता बनाए रखने के लिए आप हमेशा भजन-सिमरन करते रहें और अपना मन पवित्र रखें। अगर आपका मन शुद्ध होगा तो आप इस मार्ग पर तरक्की कर सकते हैं। आप जब तक यहाँ हैं जितना ज्यादा हो सके सिमरन करें, सतगुरु की शरण में रहने की कोशिश करें।

एक प्रेमी - *क्या आप हमें बताएंगे कि जब आप महाराज सावन सिंह जी से मिलने गए थे तो उन्होंने आपको आपके गुरु के आने का इंतजार करने के लिए कहा था?*

बाबा जी - मैंने इस बारे में बहुत कुछ कहा है। आपको मैगजीन पढ़नी चाहिए।

एक प्रेमी - *हमेशा यही कहा जाता है कि भजन-अभ्यास के लिए सुबह का समय सबसे अच्छा होता है लेकिन जिन लोगों को रात की शिफ्ट में काम करना पड़ता है क्या उन्हें ऐसी नौकरी से बचना चाहिए?*

बाबा जी - आपको वक्त के हिसाब से अपना टाईम-टेबल बनाना चाहिए। हर किसी की दिनचर्या अलग-अलग है। रास्ते में कांटे हैं लेकिन आपको अपनी मंजिल तक पहुँचने के लिए मजबूत जूते पहनने होंगे। जिसने भजन-अभ्यास करना है, जिसके दिल में गुरु के लिए प्यार है उसे इस बात से फर्क नहीं पड़ता कि वह दिन में काम कर रहा है या रात में काम कर रहा है। हमें अपने अंदर प्यार बनाने की जरूरत है।

अगर हम सोचते हैं कि हम तभी भजन-अभ्यास करेंगे जब हमारे ऊपर कोई जिम्मेवारी नहीं होगी लेकिन ऐसे लोग कभी अभ्यास में नहीं बैठते आलसी बन जाते हैं। जो लोग नियमित रूप से अभ्यास करते हैं और ईमानदारी से अपनी रोजी-रोटी कमाते हैं उनकी सेहत भी ठीक रहती है और उनके पास भजन-अभ्यास के लिए समय भी है।

एक प्रेमी - *अगर भजन करते समय मन इधर-उधर भटकता है तो क्या उस समय सिमरन से उसे वापिस लाया जा सकता है?*

बाबा जी - आपको भजन के लिए उस समय बैठना चाहिए जब आपका मन शांत हो। मैं सदा ही आपको मन को शांत रखने के लिए याद दिलाता हूँ अगर आप भजन-अभ्यास में सफल होना चाहते हैं तो अपने मन को शांत रखें। आप यह बात अपने घर वापिस पहुँचकर भी याद रखेंगे तो आपको बहुत मदद मिलेगी।

***

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

आत्मा की दशा

गुरु अमरदेव जी की बानी DVD-506 मिनेआपोलिस

काया कामण अति सुआलिओ पिर वसै जिस नाले।।
पिर सच्चे ते सदा सुहागण गुर का शबद सम्हाले।।

सतसंग शुरू करने से पहले मैं आपको उस महान हस्ती की याद दिलाता हूँ जो आज के दिन पैदा हुई। जब गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब और परम सन्तों की तालीम संसार से आलोप हो गई थी उस समय कोई ऐसा कामिल फकीर नहीं था जो उनकी तालीम को फिर से चालू कर सकता।

उस वक्त परमात्मा ने सावन का तन धारण करके इस संसार में आकर फिर सन्त-महात्माओं की तालीम को ताजा किया। सुरत-शब्द का अभ्यास ही परमात्मा से मिलने का सच्चा साधन है, यह साधन परमात्मा का बनाया हुआ है। इस साधन को न कोई इंसान बदल सकता है और न कोई बना ही सकता है।

आज के दिन 27 जुलाई को महाराज सावन सिंह जी ने पंजाब के गाँव महिमासिंह वाला में जन्म लेकर दुनिया को सन्त-महात्माओं की जानकारी दी और फिर उसी तालीम को उजागर किया। दुनिया में लोग सन्तों की तालीम को भूलकर पत्थर पूजने लगे, माँस-शराब खाने पीने लगे। यहाँ तक कि संसार में आए परम सन्तों के खिलाफ भी बहुत कुछ लिख दिया।

महाराज सावन सिंह जी ने यह साबित किया कि ये महान पवित्र हस्तियां इस संसार में आई उन्होंने हर एक को पवित्र रहने का होका दिया और यह भी कहा कि आप जितने पवित्र होंगे उतनी

जल्दी ही परमात्मा से मिल सकेंगे। आपने हमें बताया कि वक्त का टीचर ही बच्चे को तालीम दे सकता है अगर हम बीमार हैं तो वक्त का डॉक्टर ही हमें दवाई दे सकता है। इसी तरह वक्त का सन्त-महात्मा ही हमें उस प्रभु से मिलवा सकता है लेकिन लोग पिछले महात्माओं से आशा रखते हैं कि वे आकर हमारी मदद करेंगे।

आप इतिहास पढ़कर देख लें! किसी महात्मा को सूली पर चढ़ाया गया किसी के सिर में गर्म रेत डाली गई और किसी का कत्ल किया गया अगर उन्होंने संसार में बार-बार आकर फिर कत्ल होना है या सूली पर चढ़ना है तो उन्हें भक्ति करने का क्या फायदा? उन्होंने भक्ति की परमात्मा के पास जाकर परमात्मा में मिल गए अगर हम भी भक्ति करेंगे तो हम भी परमात्मा में मिल जाएंगे और अपनी आँखों से उन महात्माओं को भी देख लेंगे।

जो समाजें यह कहती हैं कि अब कोई गुरु-पीर नहीं उन समाजों के दिल में मालिक से मिलने का शौंक नहीं उनके दिल में विरह पैदा नहीं हुई। हमारी आत्मा शरीर के अंदर है और परमात्मा भी शरीर के अंदर है। आत्मा परमात्मा से नहीं मिली इसलिए सुहागन नहीं हुई। जिस तरह औरत और पति एक ही सेज पर सोए हों अगर औरत पति को देखे तो सुहागन हो, यह तो बाहरी मिसाल है। परमात्मा हमारे शरीर में बसता है और आत्मा भी शरीर में ही है लेकिन यह परमात्मा से नहीं मिली। अगर हम परमात्मा से मिले होते हमें गुरु मिला होता तो **आत्मा की यह दशा** न होती और हम इस दुखी दुनिया में हाजिर न होते?

हम कह देते हैं कि परमात्मा सबके अंदर है लेकिन यह कहकर भूल जाते हैं। जितना एक इंसान को इस धरती पर जीने का अधिकार है उतना ही पशु-पक्षी को भी है। परमात्मा ने सबको

बनाया है और सबके अंदर बैठा है। हम चीखते-चिल्लाते जानवरों के गले पर छुरियां चला रहे हैं अगर हम यह याद रखें कि इनके अंदर भी परमात्मा है तो क्या हम इन पर जुल्म कर सकते हैं?

हर की भगति सदा रंग राता हौमैं विच्चों जाले।।

हम दिन-रात सोचते हैं कि मेरी कौम है, मेरा मजहब है, मैं आलम-फाजल हूँ। जब हम परमात्मा की भक्ति करते हैं तो हमारे अंदर से हौमें का जबरदस्त पर्दा दूर हो जाता है। सोचकर देखें! **आप किस चीज का अहंकार करते हैं? जवानी का मान करते हैं क्या कभी किसी का बुढ़ापा नहीं देखा? धन का मान करते हैं क्या कभी किसी कंगाल को नहीं देखा? अच्छी सेहत का मान करते हैं? अस्पतालों में जाकर मरीजों की हालत देखें वे बेचारे कैसे चीख रहे हैं।**

इस संसार में बड़े-बड़े डिक्टेटर आए जिनका नाम सुनकर दुनिया काँपती थी। उनके मुँह से निकला लफ्ज कानून बन जाता था लेकिन आज वे कब्रों में पड़े हैं और उनकी मिट्टी उड़-उड़कर हमारी आँखों का सुरमा बनी हुई है। कोई वक्त आएगा जब हम भी कब्रों में जाएंगे तो हमारी मिट्टी भी उड़कर लोगों की आँखों में पड़ेगी। कबीर साहब कहते हैंः

ऐह तन कागज की पुड़िया, बूँद पड़त गल जाओगे।
कहत कबीर सुनो भई साधो, इक नाम बिना पछताओगे।।

लुहार लकड़ी को जलाकर कोयले बना रहा था। अग्नि लुहार से कहती है कोई ऐसा वक्त आएगा जब मैं तुझे जला दूंगी।

लकड़ी कहे लुहार को, क्या जारे तू मोह।
ईक दिन ऐसा आएगा, मैं जारूंगी तोह।।

वाह वाह पूरे गुर की बाणी।। पूरे गुर ते उपजी साच समाणी।।

आप कहते हैं कि सच्चखंड से धुन उठकर हम सबके माथे के पीछे धुनकारें दे रही है। गुरु नानक साहब उसे गुरबानी, हरि कीर्तन, अकथ कथा, शब्द या नाम कहकर बयान करते हैं। मुसलमान फकीर उसे बाँगे असमानी, निदाय सुल्तानी कहकर बयान करते हैं। हिन्दु महात्मा उसे आकाशवाणी, राम-नाम, राम-धुन कहकर बयान करते हैं और ईसा ने उसे वर्ड कहा है।

जिस तरह धरती के अंदर पानी है जो लोग कुआँ, नलका या टयूबवेल वगैरहा लगा लेते हैं वे अपनी प्यास बुझा लेते हैं। बेशक वह ताकत हम सबके अंदर है लेकिन जब तक हम सन्त-महात्माओं के पास जाकर उस ताकत को जगा नहीं लेते तब तक हम उनसे फायदा नहीं उठा सकते। विद्या की ताकत बच्चे के दिमाग में है जो बच्चे टीचर के पास जाते हैं वे उस सोई हुई विद्या को जगा लेते हैं।

काया अंदर सभ किछ वसै खंड मंडल पाताला।।
काया अंदर जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला।।

अब आप कहते हैं कि सब कुछ परमात्मा ने पैदा किया है। जो कुछ ब्रह्मांड के अंदर है वही पिंड के अंदर है, ये सब चीजें मन के पर्दे के पीछे सूक्ष्म रूप में हैं। परमात्मा इस शरीर के अंदर है सबकी रखवाली कर रहा है, उसने सबको जीवन दिया है। परमात्मा न किताबों में है न बाहर समुंद्र-पहाड़ो में है, परमात्मा इंसान के अंदर है और अंदर से ही मिल सकता है। परमात्मा जिसे मिला अंदर से मिला है और जिसे मिलेगा अंदर से ही मिलेगा।

काया कामण सदा सुहेली गुरमुख नाम समाला।।
काया अंदर आपे वसै अलख न लखया जाई।।
मनमुख मुगध बूझै नाहीं बाहर भालण जाई।।

आप कहते हैं अगर कोई सच्चे से सच्चा मंदिर, ठाकुर द्वारा या चर्च है तो वह इंसान की देह है इंसान का वजूद है जिसे परमात्मा ने खुद बनाया है और परमात्मा इसके अंदर बैठा है। महात्मा ने धर्मस्थान बनाकर हमें समझाया कि इनके अंदर जाना क्यों जरूरी है, रस्मों-रिवाज करने क्यों जरूरी हैं? यह सब कुछ बनाकर समझाया कि परमात्मा ने सब कुछ आपके अंदर रखा है।

हिन्दुओं के मंदिर में सबसे पहले घंटा लगा होता है, घंटा बजाकर अंदर जाते हैं ज्योत जलाई जाती है। सिक्खों के गुरुद्वारे में भी ज्योत जलाई जाती है नगारा बजाया जाता है। मुसलमानों की मस्जिद में मजारों के ऊपर चिराग जलाए जाते हैं मौलवी ऊँची-ऊँची बाँग देता है। चर्च में भी सबसे ऊपर घंटा है सर्विस शुरू होने से पहले घंटा बजाया जाता है मोमबत्तियां जलाई जाती है।

महात्मा ने हमें समझाया था कि परमात्मा आपके अंदर ज्योत रूप और नाद रूप में विराजमान है लेकिन हम अंदर जाकर ज्योत देखने और आवाज सुनने की बजाय बाहर रस्मों-रिवाज में उलझ गए हैं। बाहर के रस्मों-रिवाज करने आसान है, मन आजाद रहता है और अंदर जाना बहुत मुश्किल होता है मेहनत करनी पड़ती है।

हमारी देह के नौं दरवाजे हैं। दो आँखों के सुराख, दो नाक के सुराख, दो कान के सुराख, मुँह और दो नीचे की इन्द्रियों के सुराख हैं। हमारी आत्मा और मन की सीट दोनों आँखों के बीच है। छह चक्र हैं - गुदा चक्र, इन्द्री चक्र, नाभि चक्र, हृदय चक्र, कंठ चक्र और आज्ञा चक्र। आज्ञा चक्र में हमारे मन और आत्मा की सीट है। आत्मा इससे नीचे उतरकर शरीर के अंदर आई है शरीर में से निकलकर बाहर सारी दुनिया के अंदर फैली हुई है।

महात्मा हमें समझाते हैं कि सिमरन के जरिए इसे इकट्ठा करके तीसरे तिल पर वापिस लाएं। जब हमारी आत्मा किसी भी चक्र को तोड़कर आगे जाती है तब बहुत दर्द होता है। जब हृदय चक्र को पार करती है तो ऐसा लगता कि जैसे हम मर रहे हैं। इसी तरह जब हम आज्ञा चक्र तीसरे तिल पर आते हैं उस समय हमारा एक किस्म का दूसरा जन्म होता है। जिन्होंने कमाई की रातों को जागे उन्हें पता है कि कमाई करनी कितनी मुश्किल है लेकिन हम कमाई नहीं करना चाहते इसलिए **आत्मा की यह दशा** है।

मनमुख मुगध बूझै नाहीं बाहर भालण जाई।।

जिस तरह किसी की सुई घर में गुम हो गई वह बाहर सड़क पर जाकर सूई ढूंढने लगा। राहगीर ने पूछा, ''भ्रावा! तेरा क्या खो गया है?'' उसने कहा कि मेरी सुई घर में गुम हो गई है। राहगीर ने कहा, ''फिर तू सूई यहाँ क्यों ढूंढ रहा है?'' उसने कहा कि यहाँ ज्यादा रोशनी है। राहगीर ने कहा, '' भ्रावा! जब तेरी सुई घर के अंदर गुम है तो तू उसे घर के अंदर ही ढूंढ।'' महात्मा हमें समझाते हैं कि परमात्मा आपके शरीर के अंदर है लेकिन मनमुख समझते नहीं परमात्मा को बाहर ढूंढने जाते हैं।

सतगुर सेवे सदा सुख पाए सतगुर अलख दित्ता लखाई।।
काया अंदर रतन पदारथ भगति भरे भंडारा।।

आप कहते हैं कि जब हम सतगुरु के पास जाते हैं तो वे हमें बताते हैं कि शान्ति नाम में, अपने घर सच्चखंड पहुँचकर है।

इस काया अंदर नौं खंड पृथमी हाट पटण बाजारा।।
इस काया अंदर नाम नौं निध पाईऐ गुर कै शबद वीचारा।।

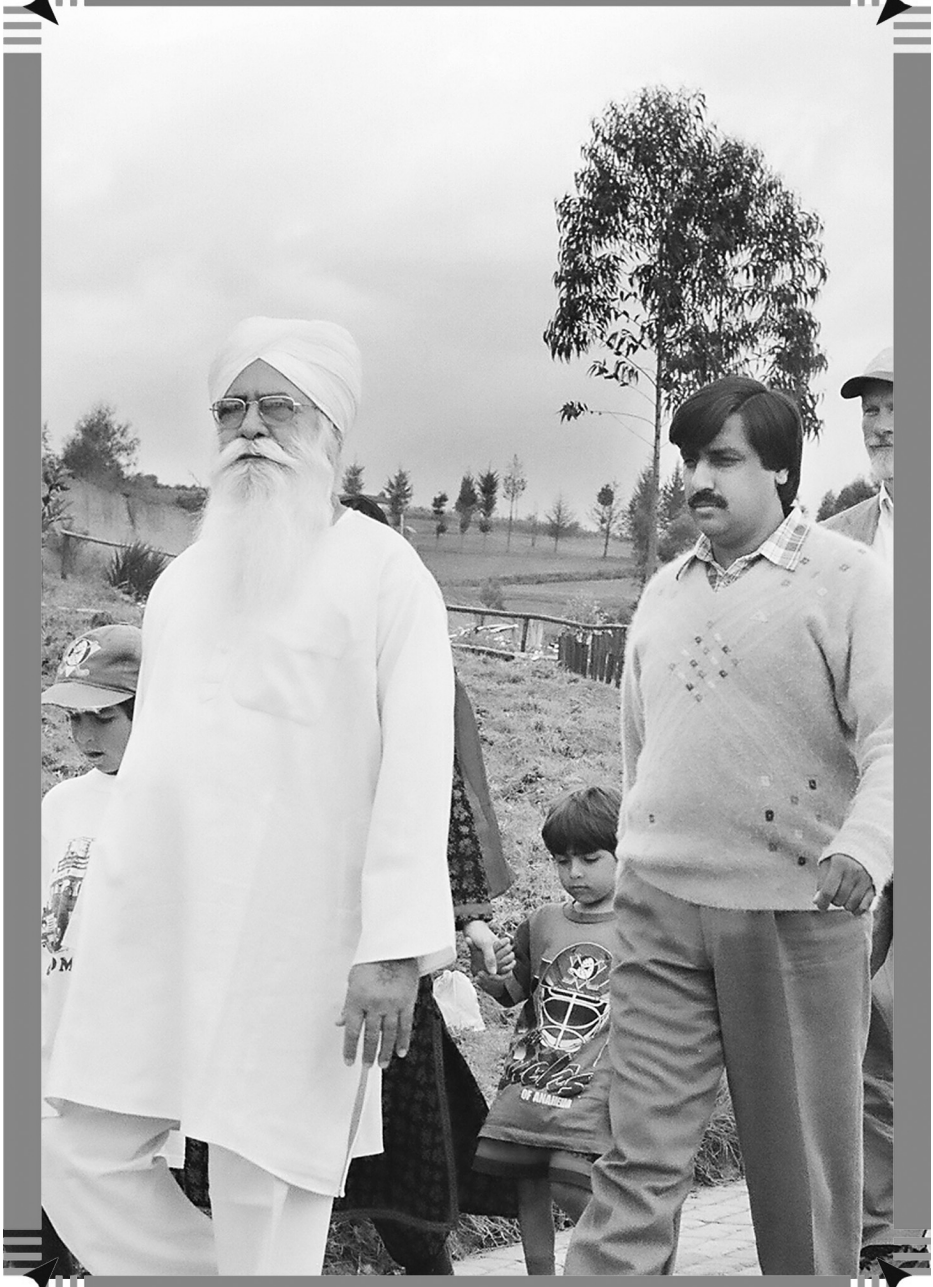

अब आप कहते हैं कि परमात्मा देह बनाकर खुद इसमें बैठ गया है। शब्द-नाम का साधन बताने के लिए फिर किसी इंसान का तन धारण करके इस संसार में आया। जिस तरह शेर का बच्चा किसी चरवाहे के हाथ में आ गया, चरवाहे ने उसे भेड़ो के साथ मिला लिया और रोजाना उस पर अपना सामान लादना शुरू कर दिया। एक दिन किसी शेर ने देखा कि यह शेर का बच्चा होकर भेड़ो में फिर रहा है। शेर उसके पास गया और उस बच्चे से कहा, ''तू शेर है।'' बच्चे ने कहा, ''मैं भेड़ हूँ।''

शेर ने उस बच्चे को समझाया लेकिन वह बच्चा नहीं माना। आखिर शेर ने उस बच्चे से कहा, ''तू मेरे साथ नहर पर चलकर अपना मुँह देखना।'' जब वे दोनों नहर पर गए तो शेर ने उस बच्चे से कहा, ''देख! तेरी और मेरी शक्ल एक जैसी है।'' उस बच्चे ने कहा, ''हाँ।'' शेर ने कहा, ''तू भी गरज और मैं भी गरजता हूँ।'' जब वे दोनों गरजे तो चरवाहा भाग गया और भेड़े भी भाग गई। शेर के बच्चे के ऊपर जो सामान रखा हुआ था वह उसने फैंक दिया और महसूस करने लगा कि मैं शेर होकर इतना वजन उठाता रहा, भेड़ो में घूमता रहा!

महात्मा हमें बताते हैं कि हमारी आत्मा उस परमात्मा की अंश है। इन्द्रियां भेड़े हैं और मन चरवाहा है। सन्त-महात्मा संसार में आकर आत्मा से कहते हैं, ''तू परमात्मा की अंश है।'' जब हम सन्तों का कहना मानते हैं तो सन्त कहते हैं, ''तू हमारे साथ चल हम तुझे दिखाते हैं कि तेरा घर कौन सा है?'' जिन आत्माओं के अंदर परमात्मा से मिलने का शौंक होता है उन्हें महात्मा उनके घर सच्चखंड ले जाते हैं। महात्मा हमें हमारा घर दिखाने के लिए ही आते हैं लेकिन हमने अपना हृदय पाक और पवित्र बनाना है।

काया अंदर तोल तुलावै आपे तोलणहारा।।

अब आप प्यार से समझाते हैं कि जो लोग यह कहते हैं कि यह देह हाड-माँस चमड़ी की बनी है। हमसे किसने लेखा पूछना है जिसका मर्जी गला काट लें चाहे जिसका मर्जी खा लें? गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं कि आप दिल से यह ख्याल निकाल दें क्योंकि आपके अंदर एक ऐसा भी बैठा है जो आपका लेखा-जोखा कर रहा है। आप जो थोड़ा बहुत दान-पुण्य या पाप करते हैं वह उसका लेखा भुगतवाएगा। उसे किसी गवाही की जरूरत नहीं वह अंदर बैठा सब देख रहा है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नानक आखे रे मना सुणिए सिख सही, लेखा रब मंगेसिया बैठा कढ़ बही।
अजरा ईल फरिशता होसी आई पई, आवण जाण न सुझी भीड़ी गली फही।
कूड़ न खुट्टे नानका ओड़क सच रही।।

एह मन रतन जवाहर माणक तिसका मोल अफारा।।
मोल कितही नाम पाईऐ नाहीं नाम पाईऐ गुर बीचारा।।

गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं कि परमात्मा किसी की पर्सनल जायदाद नहीं, परमात्मा सबका दाता है सबका बादशाह है; हर कौम उसकी हकदार है। जितनी औरत हकदार है उतना ही मर्द हकदार है जो भी भक्ति करे वह परमात्मा को पा सकता है।

नाम किसी भी जाति का नहीं। परमात्मा जिस पर दया-मेहर करता है वह इस नाम को पा सकता है। नाम बाजारों में मूल्य देने से खरीदा नहीं जा सकता। सन्त-महात्मा परमात्मा के भेजे हुए इस संसार में आते हैं। सन्त-महात्मा नाम की कोई फीस नहीं लेते हर एक को नाम की दात मुफ्त में देते हैं।

गुरमुख होवै सो काया खोजै होर सभ भरम भुलाई।।

दो तरह के इंसान हैं एक गुरमुख और दूसरे मनमुख। जो सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण से ऊपर जाकर अपने घर सच्चखंड पहुँच जाते हैं, वे गुरमुख बन जाते हैं। मन की बात मानने वाले कहते हैं खाओ-पिओ, उड़ाओं किसी ने लेखा नहीं पूछना वे मनमुख हैं। गुरुमुख काया के अंदर जाकर परमात्मा की खोज कर रहे हैं और मनमुख लोग बाहर भ्रम में ही फिर रहे हैं।

जिसनों देय सोई जन पावै होर क्या को करै चतुराई।।

परमात्मा ने सब कुछ अपने हाथ में रखा हुआ है। परमात्मा जिसके ऊपर दया-मेहर करता है सबसे पहले उसे सतसंग में लाता है फिर उसके अंदर नाम का शौंक पैदा करता है, महात्मा उसके अंदर नाम रख देते हैं। परमात्मा चतुराई से नहीं पाया जा सकता। प्रभु दया करे तभी हमारा भूला-भटका मन इस तरफ आ सकता है।

काया अंदर भौ भाओ वसै गुर परसादी पाई।।
काया अंदर ब्रह्मा बिसन महेसा सभ ओपत जित संसारा।।

अब गुरु अमरदेव जी कहते हैं कि ये तीनों शक्तियां भी शरीर के अंदर है। हिन्दु, पैदा करने वाली शक्ति को ब्रह्मा कहते हैं। जो शक्ति सबको पालती और रोजी देती है उसे विष्णु कहते हैं। जो शक्ति सबका अंत मौत करती है उसे शिव कहते हैं। ये तीनों शक्तियां आपके शरीर के अंदर हैं। अगर आप इन शक्तियों से मिलना चाहें तो आप अंदर जाकर इनसे मिल सकते हैं, देख सकते हैं कि इनकी क्या ड्यूटियां हैं?

सच्चै आपणा खेल रचाया आवागौण पासारा।।
पूरे सतगुर आप दिखाया साच नाम निसतारा।।

अब आप कहते हैं कि परमात्मा की मौज हुई तो उसने दुनिया की रचना रच दी। सिर्फ कहने की देर थी सब खंड-ब्रह्मांड रचे गए। परमात्मा ने जिसे भी अपने साथ मिलाना है उसे गुरु की शरण में लेकर आता है।

एका पसाओ तिस ते होए लख दरियाओ।

फिर सतगुरु हमें उस घर की समझ देते हैं। परमात्मा एक समुंद्र है शब्द उसकी लहर है और आत्मा उसकी बूँद है। समुंद्र भी पानी है लहर भी पानी है बूँद भी पानी है फर्क सिर्फ बिछोड़े का है।

सन्त-महात्मा हर धर्म का आदर करते है, किसी का धर्म नहीं छुड़वाते। महात्मा कहते हैं कि अपने-अपने धर्मों में रहें और अपने-अपने बोले बोलें। वे हमें रीति-रिवाज नहीं सिखाते न ही वे अपने मिशन में कोई रीति-रिवाज रखते हैं। धर्मों के लीडर दिन-रात रीति-रिवाज करने में लगे हुए हैं अगर रीति-रिवाज करने से परमात्मा मिलता होता तो दुनिया में शान्ति आ जाती।

सा काया जो सतगुरु सेवै सच्चै आप सवारी।।
विण नावैं दर ढोई नाहीं ता जम करे खुआरी।।

गुरु अमरदेव जी कहते हैं कि नाम के बिना हम दरगाह में दाखिल नहीं हो सकते, हमें यमदूतों के हाथों परेशान होना पड़ेगा।

नाम विसार चले अनमारग अंत काल पछताई हे।
जिन हर हृदय नाम न वसयो तिन मात कीजे हर वांझा।।

नानक सच वड्याई पाए जिसनों हर किरपा धारी।।

आखिर में आप हमें एक ही नसीहत करते हैं कि परमात्मा के दर पर उन्हें ही बड़ाई मिलती है, जो सच्चे नाम की कमाई करते हैं जो सच्चा नाम प्राप्त कर लेते हैं। सच का मतलब जिसका कभी

नाश न हो जो कभी फनाह न हो वह एक परमात्मा है जिसने कुल दुनिया की रचना पैदा की है, वह सबके अंदर बैठा है। वह नाम हिन्दी, पंजाबी, गुरमुखी या किसी और भाषा में नहीं लिखा जाता। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

अक्खां बाजो देखना बिन कन्ना सुनना।
पैरां बाजो चलना बिन हत्था करना।
जीभा बाजों बोलना एयों जीवित मरना।
नानक हुक्म पछाण के त्यों खसमें मिलना।।

हजरत बाहू कहते हैंः

जुबानी कलमा हर कोई आखे दिल दा पढ़दा कोई हू।
जित्थे कलमा दिल दा पढ़दे ओत्थे जीभा मिले ने ढ़ोई हू।
होठ न फरकन जुबान न हिले खास नवाजी सोई हू।
कलमा गुरु पढ़ाया मैंनू मैं सदा सुहागण होई हू।।

बुल्लेशाह मुसलमानों में पैदा हुए। आप चालीस साल लाहौर में मस्जिद के काजी रहे। आपका पिता भी मस्जिद का काजी था। आप मुसलमानों की शरा के मुताबिक रोजे रखते और नमाज भी पढ़ते थे लेकिन जब आप ईनायत शाह के पास गए और उनसे कलमा लिया तब आपने अपने कलाम में लिखाः

भट्ट नमाजा ते चिक्कड़ रोजे कलमें दे सिर शाही।
बुल्ले ने श्योह अंदरों पाया ते भुल्ली फिरे लुकाई।।

***

27 जुलाई 1980

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन-अभ्यास

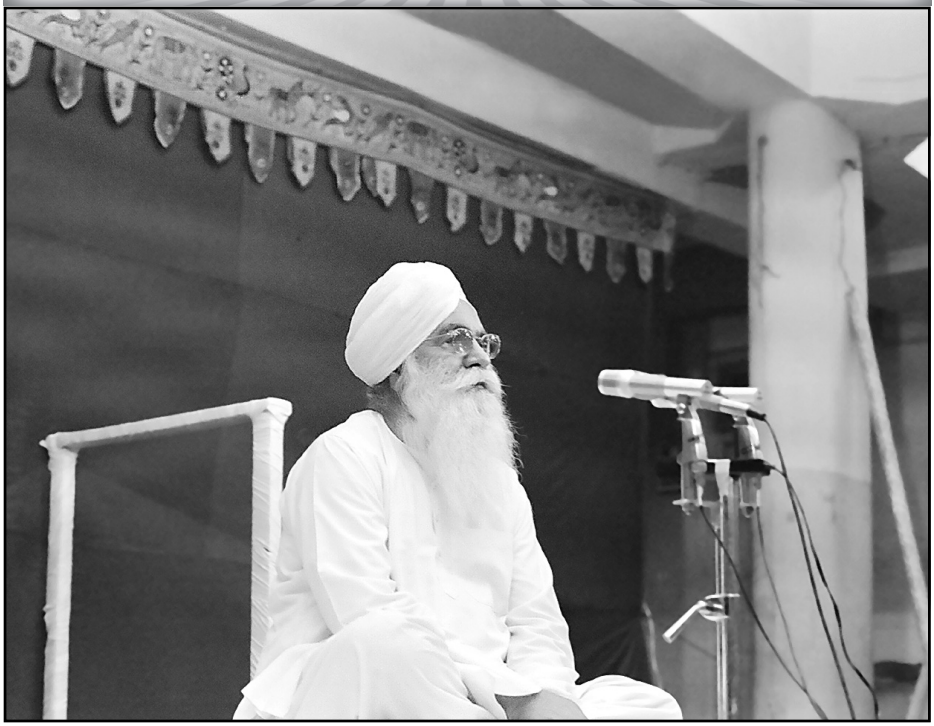

हाँ भई! रोज की तरह मन को शान्त करना है, शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मोमिन सन्त खुदा का शीशा होते हैं, शीशे में कोई फर्क नहीं होता शीशा हमें हमारा ही चेहरा दिखाता है। अगर हम हँसता हुआ देखेंगे तो हमें हमारा चेहरा हँसता हुआ नजर आएगा अगर हम रोता हुआ देखेंगे तो हमें हमारा चेहरा रोता हुआ नजर आएगा। जैसी हमारी शक्ल होगी हमें वैसा ही दिखाई देगा।''

परमपिता कृपाल ने पच्चीस साल यही कहा कि सन्त धुर से मालिक के भेजे हुए जीवों को रूहानियत देने के लिए आते हैं वे खुले

दिल से रूहानियत की दौलत लुटाते हैं लेकिन दुनिया इस दौलत की कम ही चाहवान होती है। प्रेमियों के पत्र पढ़ने से या मुलाकात करने से पता लगता है कि बहुत थोड़े ही जीव गुरु से गुरु को माँगते हैं। आमतौर पर हमारे दिल में दुनिया की ख्वाहिशें उठ रही हैं हम वही सतगुरु के आगे रखते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, ''गुरु सबको चाहता है लेकिन गुरु को कोई नहीं चाहता अगर हमें गुरु से प्यार है तो हम गुरु से गुरु को माँगेगे अगर दुनिया से प्यार है तो हम दुनिया माँगेंगे। हम अपने अंदर झाँककर देखें! हम किस चीज के चाहवान हैं?''

जिन लोगों में सच्ची प्रीत सच्ची मौहब्बत होती है वे लोग अपनी जाति छोड़कर गुरु की जाति को अपना लेते हैं। ऐसे लोगों को कुछ नहीं करना पड़ता वे अपने आपको छोड़कर गुरु में समा जाते हैं। मुसलमानों में सैयदों की खास इज्जत है, मुसलमान सैयदों को पूजते हैं, अराईयों को छोटी जाति का समझते हैं। बुल्लेशाह को ईनायत शाह से कलमा मिला था। ईनायत शाह ज्यादा पढ़े–लिखे नहीं थे, वह जमींदारा करते थे। बुल्लेशाह बहुत पढ़े–लिखे आलम–फाजल थे। बुल्लेशाह ने चालीस साल हर धर्म की किताबें पढ़ी थी। किसी ने बुल्लेशाह से कहा, ''मियाँ! तू रोज क्यों गला फाड़ रहा है? तू ईनायत शाह के पास जा, वह तेरे कान खोल देगा। वह तुझे बताएगा कि किस तरह खुदा अंदर बैठा है? तू अंदर जाकर ही खुदा से मिल सकता है।''

जब बुल्लेशाह ईनायत शाह के पास गए तो ईनायत शाह ने सोचा अगर मैं इसे किसी किताब का हवाला दूंगा तो इसे समझ नहीं आएगा क्योंकि यह अपनी पढ़–पढ़ाई पर मान करता है। ईनायत शाह प्याज की खेती कर रहे थे। जमींदारों को पता है कि प्याज एक तरफ से निकालकर दूसरी तरफ लगा देते हैं। बुल्लेशाह ने कहा, ''महाराज

जी! आप मुझे खुदा को प्राप्त करने का तरीका बताएं?'' समझने के लिए यह छोटी सी बात थी लेकिन इसके पीछे बहुत बड़ा राज छिपा हुआ था। ईनायत शाह ने कहा:

बुल्लेया रब दा की पावंणा, इधरो पुट्टणा ते ओदर लावणां।

मन को दुनिया की तरफ से हटाकर परमात्मा की तरफ लगाना है। बुल्लेशाह के गुरु ईनायत शाह अराई जाति के थे। बिरादरी वाले ताना–मेहणा मारते हुए आगा–पीछा नहीं देखते, कोई मौका हाथ से नहीं जाने देते। बुल्लेशाह के पिता और दादा दोनों ही लाहौर की मस्जिद में मौलवी रह चुके थे। लोगों ने बहुत ताने मारे कि बुल्लेशाह सैयद जाति का होकर अराईयों को पूजता है।

निन्दा घर से ही शुरू होती है। बहन–भाई, यार–दोस्त, माता–पिता कहते हैं कि बच्चा त्यागी हो गया है गलत तरफ चल पड़ा है फिर आस–पड़ोस और बिरादरी वाले भी निन्दा करते हैं।

बुल्लेशाह ने कहा अगर आप ईनायत शाह को बाहर से देखेंगे तो उसके गले में फटे हुए कपड़े हैं वह मिट्टी का पुतला है। अगर आप मेरी आँखों से अंदर जाकर देखें तो आप बहिश्त में भी नहीं थूकेंगे। वह खुदा से भी ऊँचे हैं जिसे मैं बयान नहीं कर सकता। शायद! मैं यह भी गलती कर रहा हूँ कि खुदा उनके प्यार में बंध चुका है। बुल्लेशाह ने कहा, ''जो मुझे सैयद कहेगा उसे दोजक में सजा मिलेगी और जो मुझे अराई कहेगा उसे बहिश्त में जगह मिलेगी।'' बुल्लेशाह ने यह कानून इसलिए बनाया कि लोग उसे ऊँची जाति वाला न कहें ताकि उसके दिल में अहंकार न आ जाए।

मस्ताना जी महाराज सावन सिंह जी के अच्छे प्रेमी, खास आशिक थे। अगर कोई मस्ताना जी को शाह मस्ताना कह देता तो आप उसे खूब डंडे मारते कि दुनिया में शाह केवल एक सावन ही हुआ है, यह

तो गरीब मस्ताना है। हम अपने दिल के अंदर झाँककर देखें क्या हमारे अंदर भी उन मालिक के प्यारो के लिए प्यार और तड़प है?

सन्त हमें यह भी बताते हैं कि सतगुरु नाम देते वक्त हमारे जिस्म के अंदर उस सीट पर बैठ जाते हैं जो सीट परमात्मा ने धुर से अपने लिए बनाई होती है। सतगुरु शब्द रूप होकर हमारे साथ है अगर हमारे दिल में तड़प है तो क्यों न हम अंदर जाकर उससे मिलें? हम अंदर जाकर मिलाप तभी कर सकते हैं जब हम अपने ख्याल को दुनिया में से निकालकर तीसरे तिल पर एकाग्र करें।

मैं आर्मी की मिसाल देकर समझाया करता हूँ, मुझे आर्मी में जाने का मौका मिला। आर्मी में गन चलाने की ट्रेनिंग देते हैं कि गन किस तरह चलानी है तब बताया जाता है कि बदन, टारगेट और गन एक ही लाईन में हों। टारगेट वह है जिसे हमने अपना निशाना बनाना है। गन के भी कई हिस्से होते हैं, बिल्कुल सेंटर वाले हिस्से को गुलजरी कहते हैं उस पर सफेद निशान लगा होता है। सन्त कहते हैं कि आपने तीसरे तिल पर आना है। आपका बदन इधर हुआ, गन उधर हुई टारगेट किसी और तरफ हुआ तो आपका निशाना सही नहीं जाएगा।

जब बदन, टारगेट और गन एक ही सीध में हों, फार साईट अगले हिस्से को कहते हैं वाक साईड उस जगह को कहते हैं जो उस जगह पर गोली पहुँचाने का जिम्मेवार होता है एक छोटा सा सुराख यू की तरह का होता है इसके बीचों बीच गुलजरी को मिला दें थोड़ा सा साँस रोककर मुट्ठी बंद करके झटका न लगने दें तो गोली सही निशाने पर लगेगी, आप पास हो जाएंगे।

इसी तरह भजन में बैठते हुए हमें देखना है कि हम शरीर को ज्यादा अकड़ाकर तो नहीं बैठ रहे, आगे की तरफ तो नहीं झुके हुए या दुनिया के ख्याल तो नहीं सोच रहे? अगर दुनिया के ख्याल सोचेंगे तो

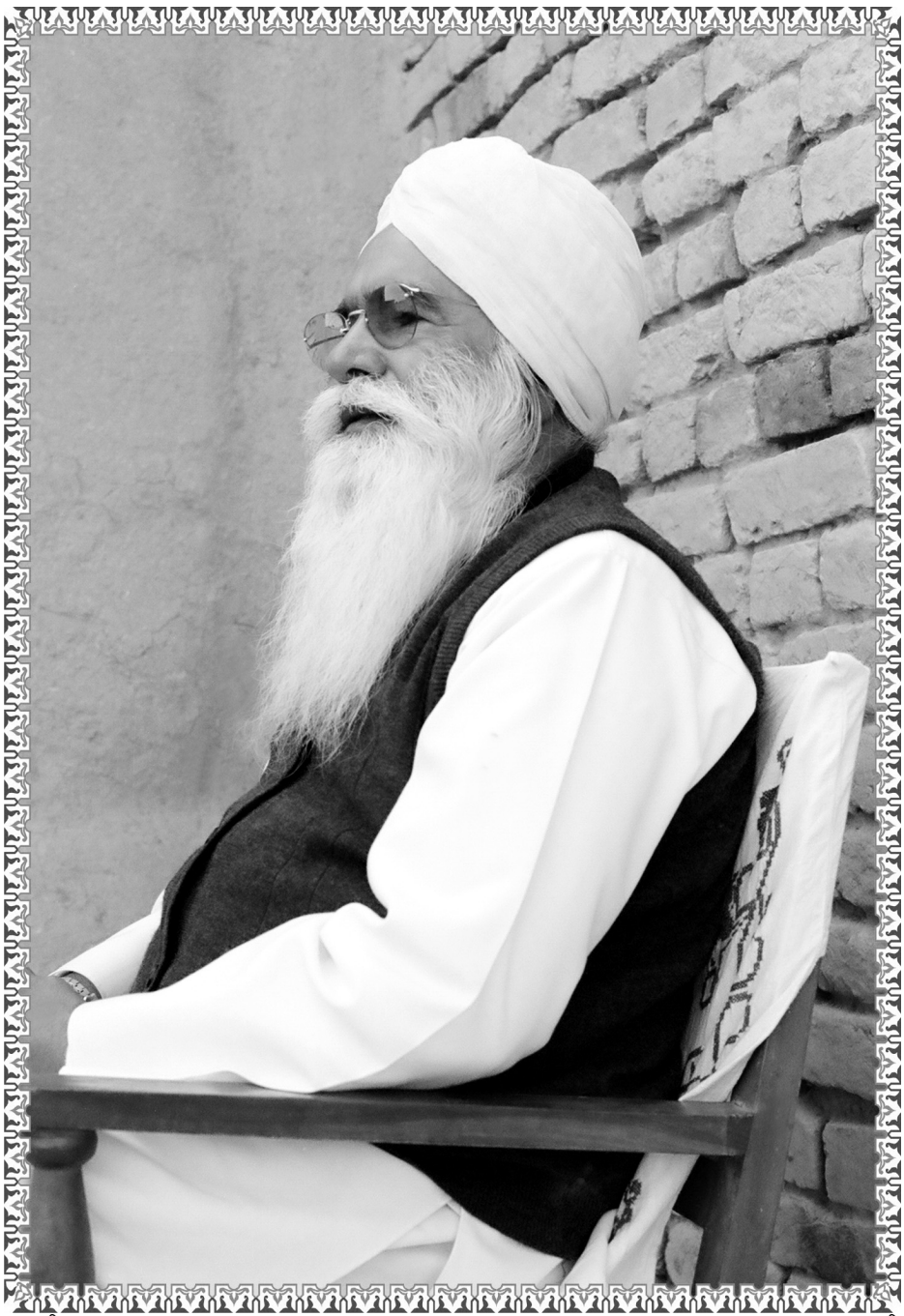

हमारा निशाना सही नहीं लगेगा। हमने अपने ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र करना है। जब हम अपने ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र करेंगे तो सवाल ही पैदा नहीं होता कि हमारा निशाना अलग चला जाए। हमें खुशी होगी कि हमारा निशान सही लगा है। जिस मुर्शिद ने आपको नाम दिया है उसे भी बेहद खुशी होती है कि एक आत्मा तो काल के जाल में से निकल गई।

मेरा जातिय तजुर्बा है, संगरूर में जब हमारा उस्ताद हमें सैर करवा रहा था तो वहाँ केले की फलिया रखी हुई थी। जो केले की फली को ठीक निशान पर गोली लगा देता तो उसे पाँच रूपये ईनाम में मिल जाते थे। इसी तरह अगर कोई पाँचों गोलियां एक ही जगह ठीक निशान पर लगा देता तो उसे सौ रूपये ईनाम में मिल जाते थे। मालिक की मौज से मैंने ये सारा ईनाम जीता है। जब समझ आ जाए तो कोई भी काम मुश्किल नहीं होता।

मैं बताया करता हूँ कि जब आप अभ्यास करेंगे तो आपको अभ्यास में महारत पैदा हो जाएगी। आर्मी में सबसे पहले हुक्म मानने के लिए कहा जाता है, जिसने सन्तमत में मेरी बहुत मदद की। आर्मी में यह हुक्म दिया जाता है कि सबसे पहले खाना तैयार करना है लकड़ी या राशन की बाद में आकर खोज करें, पहले खाना तैयार करें। जो आपको खाना बनाने का हुक्म देगा वह आपको लकड़ी और राशन भी देगा। अगर हम गुरु का हुक्म मान लें कि हमें हमारा गुरु जो कह रहा है हम वह करें। इसी तरह अगर हम सतगुरु का बताया हुआ भजन करने बैठ जाएं तो हमारी सारी मुश्किलें अपने आप ही हल हो जाएंगी।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिसके दरवाजे के आगे बैल बंधा है उसे पता है कि बैल को धूप से छाया में करना है, पानी पिलाना है और खाना भी देना है।'' लेकिन हम पत्रों में शिकायतें

करते हैं कि महाराज जी! भजन तो हमसे होता नहीं, आप कहेंगे कि भजन करो। आप मेरे पोते–पोतियों, दोते–दोतियों और आगे उनके परिवार को भी आर्शिवाद दें। सोचकर देखें! हम यह भजन करते हैं?

अगर हम सतगुरु के कहे अनुसार भजन करें तो हम कामयाब हो जाते हैं। गुरु को पता है कि मैंने इसकी जरूरतें पूरी करनी है, वह जरूरतें पूरी करता है लेकिन हम पहले यह शर्त रखते हैं कि तू हमारी जरूरतें पूरी करेगा तो हम भजन करेंगे। सोचकर देखें! क्या हम गुरु का भजन कर रहे हैं? हम तो मन के पीछे लगकर ख्वाहिशें पूरी कर रहे हैं, मन की भक्ति कर रहे हैं।

किसी ने राबिया बसरी से पूछा, ''फकीरों के सतसंगियों को दुनिया में किस तरह रहना चाहिए, दुख–सुख में कैसा मन रखना चाहिए?'' राबिया बसरी ने कहा, ''सतसंगी को पता ही न लगे कि दुख आया है या सुख आया है।'' गुरु नानकदेव जी ने कहा है:

दुख सुख दोनों समकर जाने और मान अपमाना।

ऐसा कह लेना बहुत आसान है लेकिन इस पर चलना बहुत मुश्किल है। इस पर वही चलते हैं जो शब्द–नाम की कमाई करते हैं अंदर जाकर अपने गुरुदेव से मिलते हैं।

आओ! हम अंदर जाकर अपने गुरु परमात्मा से मिलें जो अंदर हमारी इंतजार में है। हाँ भई! मन को शान्त करें तीसरे तिल पर एकाग्र करें। जिन प्रेमियों को नाम नहीं मिला उनका भी फर्ज बनता है कि तीसरे तिल पर दोनों आँखों के दरम्यान सतगुरु–सतगुरु करें, उन्हें भी प्रकाश जरूर आएगा। इस घंटे से पूरा फायदा उठाएं।

***

27 अगस्त 1985

धन्य अजायब

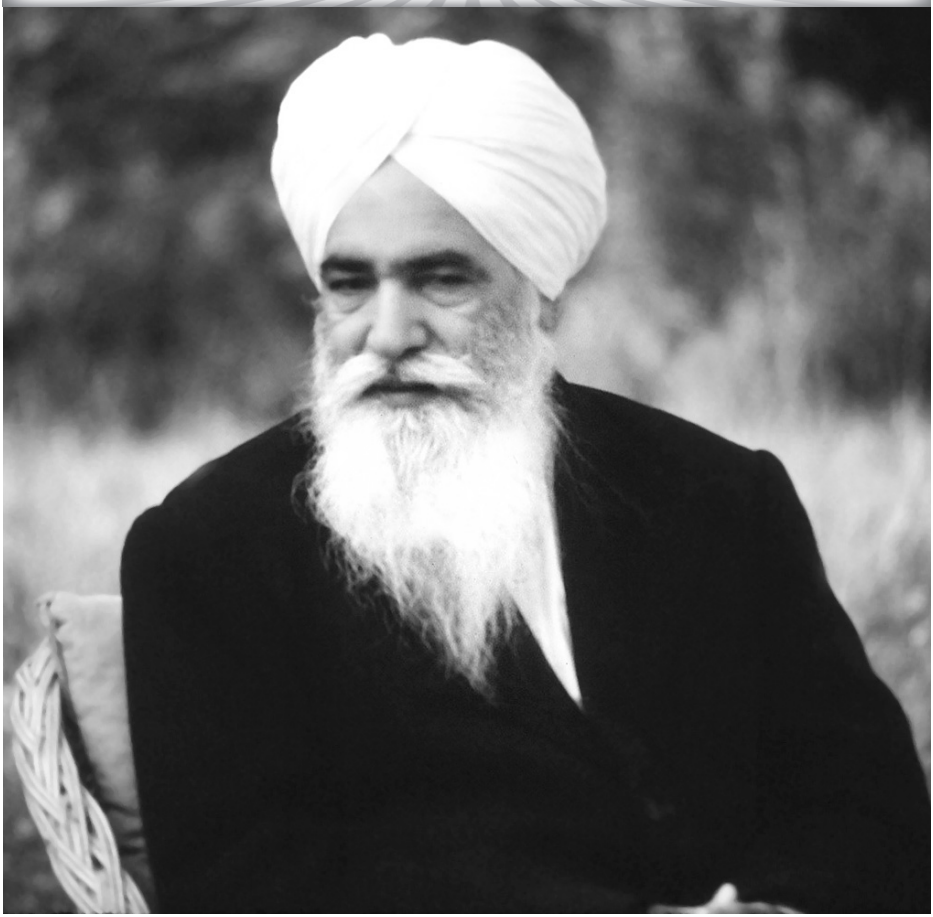

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम:

02 से 06 फरवरी 2019
01 से 03 मार्च 2019
31 मार्च से 02 अप्रैल 2019

दिल्ली में सतसंग का कार्यक्रम:

17, 18 व 19 मई 2019